International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन

ज्ञानदेव देशमुख
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. अनामिका पाण्डेय
प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षकों का चयन कर उन पर डॉ. एस.के. मंगल की 'शिक्षक समायोजन मापनी' तथा प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षण कार्य–संतुष्टि मापनी' का प्रशासन किया गया तथा विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षकों के समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायेजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव पाया गया उच्च कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों का उपरोक्त सभी क्षेत्रों में समायोजन, निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों से बेहतर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द – माध्यमिक स्तर, शिक्षक, समायोजन, कार्यसंतुष्टि

मानव जीवन में शिक्षा एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत चलती रहती है। शिक्षा का अर्थ, ज्ञानार्जन द्वारा संस्कारों अथवा व्यवहारों का निर्माण करना है। मानव अपने अनुभव के द्वारा सदैव कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा प्राप्ति हेतु अनेक औपचारिक एवं अनौपचारिक साधन उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से मनुष्य जीवन पर्यन्त शिक्षित होता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

किसी भी राष्ट्र के विकास में वहां के नागरिकों का विशेष योगदान होता है इस हेतु आवश्यक है कि देश के नागरिक शिक्षित हों। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक तथा मानसिक विकास के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के बिना ये सब अधूरे हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक की सभी प्रकार की क्षमताओं, रूचियों, योग्यताओं में विकास कर उसे राष्ट्र के विकास के क्रम में जोड़ना है।

माध्यमिक शिक्षा बालकों की सम्पूर्ण शिक्षा की आधारशिला होती है। इस हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस स्तर के विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाए, क्योंकि देश का दायित्व इन्हीं भावी कर्णधारों के कंधो पर निर्भर है। अतः इस दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का सशक्त एवं प्रभावी होना अति आवश्यक है। इसी कारण से माध्यमिक शिक्षा की विशेष भूमिका है। इस हेतु विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में शिक्षक की मुख्य भूमिका है। शिक्षक वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर विश्व व्यवस्था तथा मानवजाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है, अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज व देश की उन्नति उत्तम व प्रभावशाली शिक्षकों पर निर्भर है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षक ही विद्यालय पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति होता है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें आदि शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, परंतु जब तक उनमें अच्छे शिक्षक द्वारा जीवन शक्ति प्रविष्ट नहीं की जाती, तब तक ये निरर्थक होती है। शिक्षक के व्यक्तित्व से प्रेरित होकर छात्र–छात्राएँ विचारात्मक एवं व्यवहारात्मक धरातल पर उन सद्गुणों को प्राप्त करते है, जिनका महत्वपूर्ण योगदान उनके जीवन के विकास में परिलक्षित होता हैं। इस दृष्टि से शिक्षक के कार्य एवं व्यवहार का विशेष महत्व है।

शिक्षा प्रक्रिया के प्रमुख अंगों में शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं। इनमें शिक्षक के बिना विद्यालय, पाठ्यक्रम, शैक्षणिक सामग्री सभी अपूर्ण हैं। **जे. एफ. ब्राउन** लिखते हैं – ''समस्त बातों को ध्यान में रखकर मैं इस परिणाम पर पहुँचता हूँ कि 'अध्यापक' शिक्षा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। पाठ्यक्रम, विद्यालय संगठन और पाठन–सामग्री यद्यपि अध्यापन के महत्त्वपूर्ण अंग है, परन्तु वे सभी तब तक निष्प्राण रहते हैं जब तक कि अध्यापक के सजीव व्यक्तित्व द्वारा उनमें प्राण–प्रतिष्ठा नहीं कर दी जाती है।''

अतः किसी भी विद्यालय का भवन, छात्र, सहायक सामग्री आदि कितनी भी प्रभावशाली क्यों न हों, जब तक वहाँ के अध्यापक चरित्रवान तथा योग्य नहीं होंगे, उस विद्यालय का शिक्षण–स्तर उन्नत नहीं हो सकता। अतः बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में शिक्षकों की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक के बिना विद्यालय, पाठ्यक्रम, शैक्षणिक सामग्री सब अपूर्ण हैं। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षकों का समायोजन भली–भांति हो इसके लिए आवश्यक है कि वह अपने कार्य से संतुष्ट हों जिससे उनका शिक्षण प्रभावी हो सके। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में शिक्षकों के समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत सामयिक प्रतीत होने के कारण ही इस शोध समस्या का चयन प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है।

इस विषय से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **अत्रेय, जयशंकर (1989)** ने स्नातक स्तरीय महाविद्यालयीन शिक्षकों के मूल्यों तथा कार्य संतुष्टी का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के संबंध में अध्ययन किया। इस अध्ययन के नष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि अधिक प्रभावशली तथा कम प्रभावशाली शिक्षकों के मूल्यों तथा कार्य संतुष्टी में सार्थक अंतर पाया गया। **बासी, सतपाल कौर (1991)** ने भाषायी शिक्षकों की शिक्षण निपुणता का उनकी कार्य संतुष्टी तथा नियंत्रण के केन्द्र बिन्दु के संदर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि नियंत्रण के केन्द्र बिन्दु के आधार पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टी तथा शिक्षण निपुणता में अंतर नहीं पाया गया। शिक्षण निपुणता तथा कार्य संतुष्टी के मध्य धनात्मक सहसबंध पाया गया जबकि शिक्षण निपुणता तथा नियंत्रण के केन्द्र बिन्दू के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। **अग्रवाल, सरस्वती (2003)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि विद्या भारती से संबंधित सरस्वती विद्या मंदिरों के अधिकांश शिक्षक लगभग 93 प्रतिशत अपने व्यवसाय से संतुष्ट थे। **राव, शेखर तथा लक्ष्मी (2003)** ने भावी शिक्षकों के समायोजन का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अध्ययन किया तथा पाया कि सभी शिक्षकों का समायोजन स्तर औसत है शिक्षकों के लिंग, विषय तथा योग्यता का उनके समायोजन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं है। **कुमार, सुरेन्द्र तथा साहू, पी.के. (2005)** ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षामित्रों व नियमित शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया तथा अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि कक्षागत सम्प्रेषण तथा अधिगम के मूल्यांकन की दक्षता को छोड़कर बाकि सभी प्रकार की शिक्षण दक्षताओं में बी.टी.सी. व विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक समान है। **गौतम (2006)** ने माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अंतर नहीं था। माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अंतर नहीं था। **जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007)** ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि अध्यापकों के लिंग का उनकी शिक्षण दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। **शुक्ला, श्रद्धा एवं कुमार, अमित (2011)** ने शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के संबंध में किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि प्रभावी पुरूष तथा महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अप्रभावी पुरूष तथा महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **कुमार, अखिलेश (2015)** के अध्ययन के निष्कर्तः ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मध्य 'सामाजिक–मनौभौतिक समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' एवं 'समग्र' समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया गया। **सिंह, संगीता (2017)** के अध्ययन के निष्कर्तः ज्ञात हुआ कि विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के मध्य 'सामाजिक–मनौभौतिक समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि'

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

एवं 'समग्र' समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

उपकरण :–

1. 'शिक्षक समायोजन मापनी' [TAI] – डॉ. एस.के. मंगल
2. 'शिक्षण कार्य–संतुष्टि मापनी' – प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा

विधि :–

सर्वप्रथम बैतूल जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से 100 शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा करके चयनित शिक्षकों पर डॉ. एस.के. मंगल की 'शिक्षक समायोजन मापनी' तथा प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षण कार्य–संतुष्टि मापनी' का प्रशासन किया गया एवं 'शिक्षण कार्य–संतुष्टि मापनी' के प्राप्तांकों के आधार पर शिक्षकों को उच्च कार्यसंतुष्टि एवं निम्न कार्य–संतुष्टि वाले समूह में विभाजित करके शिक्षक समायोजन मापनी के सभी क्षेत्रों का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अलग–अलग फलांकन किया गया एवं इन सभी का योग करके समग्र समायोजन ज्ञात किया गया एवं मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका 01

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समायोजन के क्षेत्र	कार्यसंतुष्टि का स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन	उच्च	57	97.47	20.58	3.72	< 0.01
	निम्न	43	82.58	19.26		
सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन	उच्च	57	113.67	23.64	1.48	> 0.05
	निम्न	43	106.72	22.98		
व्यावसायिक संबंधों में समायोजन	उच्च	57	75.86	13.47	2.17	< 0.05
	निम्न	43	70.14	12.74		
व्यक्तिगत जीवन में समायोजन	उच्च	57	109.14	19.23	1.92	> 0.05
	निम्न	43	101.67	19.24		
वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि	उच्च	57	54.28	8.29	2.32	< 0.05
	निम्न	43	49.88	10.16		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98, 2.63

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 3.72, 2.17, 2.32 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01, 0.05, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान क्रमशः 2.63, 1.98, 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक हैं जबकि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक– शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.48, 1.92 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों का उपरोक्त सभी क्षेत्रों में समायोजन, निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात् माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

परिकल्पना – 2 : माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

तालिका 02

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समायोजन के क्षेत्र	कार्यसंतुष्टि का स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
समग्र समायोजन'	उच्च	57	450.42	70.19	2.73	< 0.01
	निम्न	43	410.99	72.27		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के समग्र समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.73 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के समग्र समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों का समग्र समायोजन, निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात् माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पनाओं का सत्यापन –

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणामों (सारणी क्रमांक 01) से स्पष्ट होता है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कि उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 3.72, 2.17, 2.32 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01, 0.05, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान क्रमशः 2.63, 1.98, 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक हैं जबकि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक– शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.48, 1.92 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम हैं, अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' के लिए पूर्व में ली गयी उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जबकि 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' के लिए पूर्व में ली गयी उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। समग्र रूप से उपरोक्त आंशिकतः अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2 – माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणामों (सारणी क्रमांक 02) से स्पष्ट है कि शिक्षकों के समग्र समायोजन के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.73 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63 की अपेक्षाकृत अधिक है, अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

एवं कार्य संतुष्टि' पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव पाया गया उच्च कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों का उपरोक्त सभी क्षेत्रों में समायोजन, निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों से बेहतर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक– शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समग्र समायोजन पर उनकी कार्यसंतुष्टि का सार्थक प्रभाव पाया गया गया तथा उच्च कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों का समग्र समायोजन, निम्न कार्यसंतुष्टि वाले शिक्षकों से बेहतर पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

पुस्तकें –

- अग्रवाल, जे.सी (1972) **विद्यालय प्रशासन**, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली
- अस्थाना, मधु एवं वर्मा, किरणबाला (1996) : **व्यक्तित्व मनोविज्ञान,** मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 86
- अस्थाना, विपिन (1999) : **मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्यांकन,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम् संस्करण
- भाई, योगेन्द्रजीत (1974) : **शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चतुर्थ संस्करण
- भाई योगेन्द्रजीत : **विकासात्मक मनोविज्ञान,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चतुर्थ संस्करण
- भार्गव, महेश (1999) : **आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन**, एच.पी. भार्गव बुक हाउस कचहरी घाट आगरा, बारहवां संस्करण
- भार्गव, तृप्ति एवं भार्गव, विवेक (1991) : **मानव व्यवहार का मनोविज्ञान,** हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा, प्रथम संस्करण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

- भार्गव, ऊषा (1993) : **किशोर मनोविज्ञान,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण
- भटनागर, ए. बी. (2003) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इन्टर कॉलेज, मेरठ, चतुर्थ संस्करण
- भटनागर, सुरेश (2007) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** आर. लाल बुक डिपो, निकट गर्वनमेन्ट कॉलेज, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 190
- सिंह, अरूण कुमार (2012) : **उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान,** मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली

जनर्ल्स एवं शैक्षणिक सर्वे –

- Agrwal, S. (1988) A study of adjustment problems and their related factors of more effective and less effective teachers (with reference to primary level female teachers). Ph.D. , Edu, Rohilkhand Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1434-1435
- Atreya, Jai Shanker (1989) A study of teacher's values and job satisfaction in relation to their teaching effectiveness at degree-college level. Ph.D. , Edu, Agra Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1435
- Basi, Satpal Kaur (1991) A study fo the teaching competency of launguage teachers in relation to their job-satisfaction, locus –of- control and professional burnout. Ph.D., Edu, Panjab Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1435-36
- **जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007)** "प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं आध्यापिकों के शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन", भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली, जुलाई 2007, पेज 113 से 123

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

- **कुमार, अखिलेश (2015)** "भोपाल जिले के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबंध, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल
- **[illegible] ([illegible])** विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की द्विभूमिका एवं अनुकूलन की समस्याओं का अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
- Shukla, Shraddha and Kumar, Amit (2011) A study of Teacher effectiveness in relation to Job satisfaction. The CTE National Journal Vol. IX, No. 1 Jan.-June 2011, Page No. 59-63.
- **सिंह, संगीता (2017)** "विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के समायोजन का अध्ययन", अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल